**Need to curb obscenity in films, internet and social media platforms-Laid**

श्री सनातन पांडेय **(**बलिया**) :** आज समाज मे फिल्मों और मोबाइल इंटरनेट के माध्यम से अश्लीलता फैलाई जा रही है । इसका समाज पर खास तौर से युवा वर्ग पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है । हालत यह है कि आप अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर फिल्म व टीवी नही देख सकते हैं । इसी अश्लीलता और गंदगी की वजह से समाज मे अपराध बढ़ रहें हैं । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की व्याख्या सिनेमाघरों के घटिया और अश्लीलता को बढ़ावा देकर पैसा बनाने के लिए एक लाइसेंस के रूप में नही की जा सकती है । सिनेमा किसी भी अन्य संचार माध्यमों की तुलना मे भावनाओं को अधिक गहराई से उभारने में सक्षम है । विशेष रूप से बच्चों और किशोरों मे इसका प्रभाव अधिक होता है । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर समाज मे पनपती अनैतिकता, उच्छृंखलता का दोष फिल्मों एवं मोबाईल नेट का है जिससे समाज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है । कोई व्यक्ति किसी पुस्तक या भाषण से उत्तेजित नही होता जितना चलचित्र देखने से होता है ।

एक वयस्क के विपरीत बच्चों के पास इस तरह के दृश्य जो अश्लील होते हैं, उन्हें उसी तरह अंगीकार कर लेने की संभावना अधिक होती है । आधुनिकता के नाम पर उच्छृंखलता को स्वीकार नहीं किया जा सकता है । यह जरूरी हो जाता है कि दर्शकों को मनोरंजन के नाम पर महिलाओं के वस्त्रहरण और अपराध के लिए प्रवृत नहीं किए जाए । फिल्मकारों को यह नही भूलना चाहिए कि वे भी इसी समाज का हिस्सा हैं । समाज के प्रति उनका भी दायित्व है ।

इस तरह कोरोना काल से सोशल मीडिया फेसबुक व यूट्यूब ऐसे प्रमुख प्लेटफार्म रहे हैं, जिनसे देश की बड़ी आबादी जुड़ी है । मौजूदा वक्त में हर वर्ग सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहा है जिस पर अश्लील चित्र, विडियो की भरमार हो गई है । फेसबुक के वीडियो वाले विंडो पर अश्लील चित्र वीडियो दिखने लगते हैं, जिसे देखकर शर्मिंदगी महसूस होती है । मेरा सरकार से निवेदन है कि फिल्म, सोशल मीडिया, प्लेटफार्म एवं अन्य इलेक्ट्रानिक माध्यमों द्वारा अश्लील सामग्री का प्रसार करने पर तत्काल प्रतिबंध लगाएं ।